रोजगार उन्मुख राजभाषा हिन्दी

निशा किचलू
राजसं., रूड़की

"हिन्दी हिन्द के हृदय की भाषा, जन-जन के मन की भाषा"

भारत में हिन्दी आम जन की व देश की आधी आबादी की भाषा होने के कारण आज हिन्दी की माँग काफी बढ़ गई है। 50 करोड़ से अधिक लोगों के बीच देखा जाए तो उच्च मध्यवर्ग में अंग्रेजी भले ही है, लेकिन ज्यादातर लोग हिन्दी ही बोलते व समझते हैं। इतनी बड़ी आबादी से जुड़े बाजार में व्यवसाय के लिये राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कंपनियाँ अपने अधिकारियों को हिन्दी सिखाने पर जोर दे रही हैं। बाजार से लेकर मीडिया तक इसका बोलबाला है। ऐसे में हिन्दी जानने वालों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अच्छे अवसर बढ़ रहे हैं:-

अध्यापन:

अध्यापन के क्षेत्र में नर्सरी से लेकर स्कूल और कॉलेज तक की ही नहीं कोचिंग संस्थानों तक में हिन्दी के जानकारों के लिए अनेकों अवसर हैं। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भी हिन्दी एक विषय के रूप में जारी है। इसे पढ़ाने के लिये ऐसे शिक्षकों की जरूरत है जिन्होंने इस विषय के साथ टीचर ट्रेनिंग भी की हो। चाहे वह नर्सरी टीचर ट्रेनिंग हो, जूनियर बेसिक टीचर ट्रेनिंग, बी.एड और एम.एड., नए और पुराने दोनों तरह के कॉलेजों में हिन्दी का अध्यापन चल रहा है। हिन्दी माध्यम से नए-नए कोर्स खुल रहे हैं। कोचिंग संस्थानों में भी विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं में हिन्दी पेपरों की तैयारी करवाने के लिये अध्यापक रखे जाते हैं।

सिविल सर्विस– राज्य स्तरीय:

राज्य स्तरीय सिविल सर्विस परीक्षा हो या केन्द्र स्तर पर इसमें अब हिन्दी माध्यम के छात्र भी काफी अच्छी संख्या में बुलंदी के शिखर पर पहुंच रहे हैं। वर्ष 2009 में छत्तीसगढ़ की 'किरण कौशल' ने जहाँ हिन्दी माध्यम से सिविल सर्विस परीक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त किया, वहीं 2010 के परीक्षा परिणाम में 'जयप्रकाश मौर्य' ने नौवां स्थान प्राप्त किया। रिजल्ट में टॉप टेन में हिन्दी वालों को पहले से ज्यादा तबज्जो मिल रही है। इसी कारण अब हिन्दी माध्यम से और हिन्दी को एक विषय के रूप में चुन कर सैकड़ों युवा राज्य और केन्द्र सिविल सर्विस परीक्षा में आ रहे हैं। हिन्दी में स्टडी मैटीरियल तैयार कराने से लेकर पढ़ाने तक का कारोबार करोड़ों रुपयों में पहुंच गया है।

मैडिकल परीक्षा- राज्य स्तरीय:

राज्य स्तरीय मैडिकल प्रवेश परीक्षा में भी हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राएं बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। इसी वर्ष रूड़की की आर्य कन्या इण्टर कॉलेज की छात्रा कु. आकांक्षा शर्मा ने यू.पी.एम.टी. की परीक्षा में 95वॉ स्थान प्राप्त कर प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ राजकीय मैडिकल कॉलेज हल्द्वानी में प्रवेश प्राप्त कर अपने स्कूल के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी तथा उत्तराखंड राज्य का मान-सम्मान बढ़ाया है ।

बैंकिग सेवा :

देश में निजी व सरकारी बैंकों ने हाल के वर्षो में अपने कारोबार में बेतहाशा बढ़ोतरी की है। जगह-जगह बैंकिग सेवा के विस्तार में हिन्दी में दक्ष युवाओं को भी रोजगार प्रदान किया है । यहाँ संस्थान की पत्रिका का प्रकाशन हो या बैंकिंग सेवा के बारे में हिन्दी भाषी जनता को कोई जानकारी देनी हो, दोनों प्रयोजनों के लिए विशेष तौर पर हिन्दी अधिकारी व कर्मचारी रखे जा रहे हैं। प्रबंधकों को भी जनता से बेहतर संपर्क कायम करने के लिए हिन्दी में निपुण बनाया जा रहा है। सी-डेक की मदद से यूनिकोड के आने से कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करना आसान हो गया है। इससे पहले ज्यादातर काम अंग्रेजी में हो रहा था। बैंक अपने यहाँ 'नेट बैंकिंग' को भी हिन्दी में विकसित कर रहे हैं।

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

प्रकाशन संस्थान:

देश में प्रकाशन उद्योग का कार्य विकास की नई सीढ़ियाँ चढ़ रहा है। इन उद्योगों का एक बड़ा कारोबार हिन्दी पट्टी से भी जुड़ा है। पारम्परिक प्रकाशन संस्थान अपने कारोबार को नित-नये आयाम दे रहे हैं। इनके अलावा हिन्दी के बाजार में अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन संस्थान भी अपने पैर जमा रहे हैं जैसे पेंग्विन हो या हार्पर कॉलिन्स। इस उद्योग में हिन्दी संपादक व अनुवादक की भी आज बहुत जरूरत बढ़ती जा रही है। विदेशी भाषाओं की किताबें भी इन प्रकाशन संस्थानों से हिन्दी माध्यम में अनुवादित होकर आ रही हैं।

पब्लिक रिलेशन अधिकारी:

नगरों और महानगरों में आज पी.आर. कंपनियाँ भी अपने कारोबार स्थापित कर रही हैं। इन कंपनियों में बेहतर हिन्दी के साथ लैस युवाओं की खासी जरूरत है। ये युवा संस्थान के कारोबार को मीडिया के माध्यम से प्रतिष्ठित करते हैं। कई बार सीधे-सीधे लोगों के बीच भी किसी कंपनी की छवि और उसके उत्पाद को प्रचारित करते हैं। रोजगार का यह नया क्षेत्र दिनों-दिन खूब बढ़ रहा है।

मैनेजमेंट:

अंग्रेजी में एम.बी.ए. कराने और इससे जुड़े संस्थान चलाने के कारोबार में हिन्दी ने भी अपनी दस्तक दी है। जिस तरह अंग्रेजी चैनल की दुनिया में हिन्दी चैनल ने अपनी जगह बनाई, उसी तरह अब हिन्दी माध्यम से एम.बी.ए. भी अपनी जगह बना रहा है। बाजार में ऐसे प्रशिक्षित प्रबंधकों को पैदा करने के लिए ही "महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय" ने हिन्दी माध्यम से एम.बी.ए., बी.बी.ए., पी.जी.डी.बी.एम. का कोर्स शुरू किया है।

अनुवाद:

अनुवाद के क्षेत्र में हिन्दी की उन्नति दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। निजी और सरकारी दोनों तरह के संस्थानों में अनुवादकों की जरूरत पड़ रही है। अनुवाद ब्यूरो इन जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थापित हुए हैं। भारत सरकार ने भी राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद ब्यूरो बनाने की योजना बनाई है। कर्मचारी चयन आयोग सरकारी कार्यालयों में अनुवादकों की माँग को देखते हुए हर साल परीक्षा भी आयोजित करता है। इसमें कनिष्ठ और वरिष्ठ दोनों श्रेणी के अनुवादक चयनित होते हैं। अनुवाद के साथ दुभाषिया भी रखे जा रहे हैं। विदेशी

फिल्मों की हिन्दी में डबिंग हो या संसद में अंग्रेजी भाषा से हिन्दी में रूपान्तरण या विदेशी शिष्टमंडल की भाषा का हिन्दी में रूपान्तरण , इन सभी कामों के लिए दुभाषियों की जरूरत होती है। दुभाषिए को रोजगार के अलग से अवसर भी मिल रहे हैं। नेशनल जियोग्राफिक, डिस्कवरी और इस तरह के कई और चैनल हिन्दी में कार्यक्रम लेकर आ रहे हैं। इसने अनुवादकों और दुभाषिए को काम के नए अवसर दिए हैं।

राजभाषा संस्थान:

केन्द्र स्तर पर राजभाषा के रूप में हिन्दी को बढ़ावा देने और उसके प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा संस्थान में भी हिन्दी से जुड़े लोगों को काम के अवसर मिल रहे हैं। यहाँ राजभाषा अधिकारी, हिन्दी सहायक, हिन्दी अनुवादक व हिन्दी टाइपिस्ट जैसे पदों पर काम करने के अवसर मुहैया कराए जाते हैं।

पं. जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में-

"हिन्दी एक जानदार भाषा है। इसका जितना विकास होगा, देश उतना ही आगे बढ़ेगा"।

मीडिया, मनोरंजन एवं विज्ञापन:

रोजगार के बाजार में नए केन्द्र के रूप में हिन्दी के लिए मीडिया है। यहाँ प्रिन्ट और इलैक्ट्रानिक मीडिया दोनों के अभूतपूर्व विस्तार ने रोजगार के अनेकों अवसर मुहैया कराए हैं। दोनों में संपादन और लेखन का काम प्रमुख है। इस उद्योग का विस्तार भी जारी है। एफ.एम. रेडियो, कम्युनिटी-रेडियो और इंटरनेट मीडिया के नए क्षेत्र हैं जहाँ आए दिन कन्टेंट तैयार करने और स्क्रिप्ट लेखन का काम होता है। मनोरंजन उद्योग की ओर देखें तो हॉलीवुड फिल्मों की हिन्दी डबिंग का काम तेजी से बढ़ा है।

विज्ञापन उद्योग में हिन्दी में आकर्षक और प्रभावी विज्ञापन तैयार करने के लिए युवाओं की माँग बढ़ी है। **'प्रसून जोशी'** जैसे कई लेखकों ने विज्ञापन की दुनिया में अलग पहचान कायम की है। इंटरनेट पर कन्टेंट राइटिंग और अनुवाद के लिए हिन्दी के विशेषज्ञों और भाषाविदों की जरूरत बढ़ी है। आकर्षक मार्केटिंग के लिए विज्ञापन में हिन्दी का इस्तेमाल हो रहा है जिससे रोजगार के नये अवसर पैदा हो रहे हैं ।

आने वाले समय में हिन्दी वैश्विक भाषा बनने की ओर अग्रसर है। आज संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र से आगे निकलकर हिन्दी ज्ञानोत्पादन के क्षेत्र में बढ़ रही है।

श्री राजीव गांधी जी के शब्दों में :

"हिन्दी भाषा अब राजभाषा ही नहीं अपितु विश्व भाषा व व्यापार भाषा भी बन रही है"

"हिन्दी भाषा की सरगम, होंठों पर रखिये हरदम"

*****